an>

Title: Regarding making camel as and endangered animal and a state animal of Rajasthan

श्री पी.पी.चौधरी (पाली) : माननीय सभापति जी, मैं सदन का ध्यान राजस्थान के जहाज कहे जाने वाले पशु ऊँट की ओर आकर्षित करते हुए बताना चाहूंगा कि ऊँटों की संख्या में निरंतर कमी हो रही है। उनकी माली हालत और इन पर राजस्थान के रेगिस्तानी इलाकों में रहने वाले ग्रामीणों की निर्भरता को ध्यान में रखते हुए राजस्थान सरकार ने ऊँट को संरक्षित पशुओं की श्रेणी के साथ राजकीय पशु घोषित किया है। पौराणिक कथाओं में भी ऊँटों का जिक्र किया गया है। भारत के ऋग्वेद और ईरान के ज़िंदा एवेस्ता ग्रंथों में भी इसका वर्णन है। सभी जानते हैं कि ऊँट बिना पानी व खाने के विपरीत परिस्थितियों में भी अपना जीवन यापन कर सकते हैं। राजस्थान और गुजरात का थार एक विस्तृत क्षेत्र है। अतः यहां ऊँट की उपयोगिता सर्वाधिक है।

ऊँट को राजस्थान में सवारी व माल ढोने के साथ-साथ सीमा सुरक्षा बलों के द्वारा सीमा की सुरक्षा हेतु गश्ती लगाए जाने के काम में भी लाया जाता है। राजस्थान के बीकानेर जिले में राष्ट्रीय स्तर का अनुसंधान केंद्र भी स्थापित किया गया है लेकिन इसकी स्थिति पर पिछली सरकारों ने ध्यान नहीं दिया। ऊँटनी के दूध के औषधीय गुणों के बारे में सब जानते होंगे। इसके दूध में विटामिन ई, सी व प्रोटीन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होता है। ऊँटनी के दूध से मंद बुद्धि बच्चों के विकास की भी डॉक्टरों द्वारा पुष्टि की गई है। इसके अतिरिक्त इसका दूध रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने, मधुमेह, क्षय, डाइबिटीज, एनीमिया, पीलिया, दमा, तपेदिक, एलर्जी जैसी गंभीर बीमारियों के इलाज में भी लाभकारी सिद्ध होता है।

मेरा सदन के माध्यम से पशुपालन एवं डेयरी विकास मंत्री जी से अनुरोध है कि ऊÃ¬टनी के दूध के संग्रहण करने हेतु राजस्थान के प्रत्येक जिले में अलग से डेयरी खोलने हेतु राज्य सरकार को वित्तीय सहायता देने की योजना बनाने की कृपा करे ताकि लाखों की संख्या में ऊँट पालकों को विकास की मुख्यधारा से जोड़ा जा सके।